प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी दिनांक 15 अगस्त 1999 लाल किले की प्राचीर से राष्ट्र को सम्बोधन

भाइयो, बहनो और प्यारे बच्चो, स्वतंत्रता दिवस के पावन अवसर पर मेरी शुभकामनाएं स्वीकार करें। यह दिन हमारे लिए पवित्र स्मरण का दिन है। यह दिन हमारे लिए समर्पण का दिन है। इस वर्ष यह दिन हम सबके लिए विशेष महत्व रखता है। वर्तमान शताब्दी समाप्त होने जा रही है। अगले स्वतंत्रता दिवस पर विश्व 21वी सदी में पहुंच चुका होगा। 20वी सदी की संध्या में, बीते हुए युग की प्रमुख घटनाओं ने भारत की पुण्य भूमि से उपनिवेशवाद की समाप्ति सबसे महत्वपूर्ण घटना है।

हमारे महान नेताओ को देशवासियो की अन्य पीढ़ियों ने स्वतंत्रता के लिए प्रबल संघर्ष किया। दुनिया के अन्य देशों के लिए भी स्वतंत्रता का पथ प्रशस्त किया। हम उन त्यागी, तपस्वी, नेताओं और देशभक्त को नमन करते हैं, जिन्होंने जीवन भर स्वतंत्रता की लड़ाई लड़ी। आवश्यकता पड़ने इस महान यज्ञ में अपने प्राणों की आहुति भी दी। आइए, हम सब देशवासी स्वयं को उन महान नेताओं योग्य उत्तराधिकारी बनने का प्रयास करें। आज का ये पवित्र दिन हम उनकी स्मृति में समर्पित करते हैं।

उसी तरह आज मैं थल, वायु सेना के उन बहादुर जवानों, अफ्सरों तथा अन्यों के प्रति अपनी श्रद्धांजली अर्पित करता हूं। जिन्होंने कारगिल में अपनी मातृभूमि को शत्रुओं के कब्जे से छुड़ाने में अदभुत पराक्रम, शौर्य और बलिदान दिखाया। काल के इस कारगिल युद्ध में वीरगति पाने वालों के प्रति हम सब श्रद्धा से नतमस्तक हैं। टेलीविजन पर प्राय सभी देशवासियों ने उन दुर्गम पहाड़ियों को देखा होगा, जिन पर विजय पाकर हमारे बहादुरों ने दुश्मन को खदेड़ा। इतनी ऊंचाइयों पर विजय पाना, मात्र गगनचुंबी चोटियों को फतेह करना नहीं है। यह देश की समूची शक्ति हो दर्शाता है। हमारे सेनाओ का शौर्य का प्रतीक है। ऐसे बहादुरों को हम कैसे भूल सकते हैं। हम उन घायल जवानों को भी कैसे भूल सकते हैं, जिनकी केवल एक ही इच्छा थी, वो कब जल्दी से जल्दी ठीक हों, और कब दुश्मनों को खदेड़ने के लिए अपनी बटालियन में फिर शामिल हों? उन बहादुर शहीदों के परिवारजनों को कैसे भूल जाएं, जो अपने स्वजन का पार्थिव शरीर पाकर कहते हैं, हमारी आंखों में आंसू नहीं हृदय में गर्व है? हम उस मां को कैसे भुला सकते हैं, जिसे इस बात का दुख था कि उसका एक ही बेटा इस देश के काम आया। काश उसका दूसरा बेटा भी होता, तो वो उसे भी देश की खातिर लड़ने के लिए मोर्चे पर भेज दे।

मैं जानता हूं, केवल गहरी संवेदना काफी नहीं है। हमें शहीदों के परिवार वालों और घायल हुये जवानों के लिए ठोस उपाय करने हैं। जिससे वे सुविधा और सम्मान के साथ जीवनयापन कर सकें। ये कहा जाता है कि युद्ध के समय और उसके तुरंत बाद हम अपने सैनिकों को याद करते हैं, उन्हें सम्मान देते हैं। परंतु समय गुजरते ही उन्हें भूल जाते हैं। ये अफसोस की बात है कि जिन बहादुरों ने पिछली लड़ाइयो में अपना जीवन निछावर किया या घायल हुये, उन्हें हमने शायद कुछ भुला दिया। मैं आपको विश्वास दिलाता हूं कि इस बार ऐसा नहीं होगा।

ये लाल किला और इसकी जानी पहचानी प्राचीर मात्र एक भौगोलिक स्थान नहीं है। इसके और इस प्राचीर के साथ हमारी स्वाधीनता की तड़प जुड़ी हुई है। 1857 के प्रथम स्वाधीनता संग्राम में बहादुरशाह जफर को यहीं बंदी बनाया गया था। इसी दुर्ग को लक्ष्य बनाकर नेता जी सुभाष चंद्र बोस ने सन् 1943 में स्वतंत्रता की दुमदुमी बजाते हुए, देशवासियों के आह्वान किया था 'दिल्ली चलो' , चलो लाल किले'। 1947 में स्वर्गीय पंडित जवाहर लाल नेहरू ने स्वाधीन भारत का तिरंगा पहली बार इसी प्राचीर से फहराया था। अर्धशताब्दी से अधिक समय गुजर गया, आज हम एक नये युग की दहलीज पर खड़े हैं। आइए, इस नये युग में हम एक मत, एक कदम होकर चलें।

पिछले साल जब मैंने इस प्राचीर से आपको सम्बोधित किया था। तब देश में अनिश्चितता और अविश्वास का वातावरण था। पूछा जा रहा था कि क्या हम आर्थिक प्रतिबंधों का मुकाबला कर पाएंगे? क्या हम उस आर्थिक संकट की चपेट से उभर पाएंगे, जिसने दक्षिण पूर्व एशिया की अर्थव्यवस्था को झकझोर दिया था ? क्या सरकार को अपना

काम करने दिया जायेगा? मैं आज यहां आत्मविश्वास से भरे भारत को सम्बोधित करता हुआ कहता हूं कि प्रतिबंध अपना असर खो चुके हैं। अब वो बीती बात बनकर रह गये हैं। हमने उनका मुकाबला इस तरह से किया कि उनका हमारी अर्थव्यवस्था पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा। हम दक्षिण पूर्व एशियाई आर्थिक संकट से बचे रहे। हां, सरकार जरूर गिरा दी गई, मगर देश चलता रहा। चरैवेति चरैवेति के मंत्र को साकार करता रहा। और सरकार अपने कर्तव्य का निर्वहन करती रही। इस बीच इससे से अधिक महत्वपूर्ण बात ये रही कि हम पर युद्ध थोप दिया गया। हमने केवल मुश्किलों पर ही विजय नहीं पायी है। हमने काफी उपलब्धियां भी हासिल की हैं। हमारे मार्ग में आयी बाधाओं के बावजूद, देश की राष्ट्रीय आय में 6 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। खाद्यान का उत्पादन 200 मिलियन टन से अधिक हुआ। ये पहले की तुलना में सबसे अधिक है। आज खाद्य भण्डार पहले की अपेक्षा काफी अधिक है। इसके लिए किसान बधाई के पात्र हैं। कृषि वैज्ञनिकों का अभिनंदन होना चाहिए। औद्योगिक उत्पादन भी काफी तेजी से बढ़ रहा है। आधारभूत ढांचे के क्षेत्र में जो नये प्रयास शुरू किये गये हैं, उनसे संपूर्ण अर्थव्यवस्था में सार्थक बदलाव आया है। आज हमारा विदेशी मुद्रा भण्डार 30 मिलियन डॉलर, यानी एक लाख 20 हजार करोड़ रुपये से अधिक पहुंच गया है। जो कि पहले से काफी अधिक है। शेयर बाजार में सेनसेक्स भी रिकॉर्ड स्तर पर पहुंच गया है। कानुनी कार्यवाई के बावजूद हमारी कम्पनीयां अपना बाजार मूल्य 2 लाख करोड़ तक बढ़ाने में समर्थ रही हैं। आवास निर्माण के लिए सिमेंट की आपूर्ति पहले की तुलना में 22 प्रतिशत ज्यादा है। उत्पादन के लिए बीमा, क्रेडिट कार्ड जैसी कुछ सुविधाएं जो केवल गिनेचुने लोगों और शहरों तक ही सीमित रही हैं, अब ये किसानों तथा दूर-दराज के गांव के अन्य लोगों को भी उपलब्ध हैं। और वो उनसे लाभ उठा रहे हैं।

आज हम पहले से अधिक मजबूत हैं। पोखरण ने हमें ताकत दी है। इससे हमें आत्मविश्वास पैदा हुआ है। दबावो का मुकाबला करते हुए, हमने अग्नि-2 का सफल परिक्षण किया। इसे हमारे शस्त्रागार में शामिल कर लिया जायेगा। PSLV तथा INSAT-2E सफलतापूर्वक अंतरिक्ष में छोड़े गये। हमारे वैज्ञानिकों ने एक नहीं बल्कि तीन उपग्रहों को एक ही रॉकेट से अंतरिक्ष में भेजा। और उन्हें वहां अपने नियत स्थानों पर स्थापित कर दिया। यह एक शानदार उपलब्धि है।

हां, एक चीज जो निश्चित रूप से घटी है। वह है, मुद्रास्फीति। इनफ्लेशन। जोकि 1.3 परसेंट तक आ गयी है। यह दर पिछले 17 सालों में सबसे कम है। भारत के प्रति विश्व के नजरिये में भी काफी बदलाव आया है। पिछले वर्ष हमने पोखरण जैसा एक बड़ा कदम जो हमारी सुरक्षा के लिए जरूरी था उठाया। ये एक ऐसा कदम था, जिस पर बहुत पहले से सोचा जा रहा था। किंतु दबाव के कारण वो कदम नहीं उठाया जा सका।

कुछ देश हमारे मुल्यांकन से सहमत नहीं थे। कुछ ने तो हमें एक गैरजिम्मेदार राष्ट्र के रूप में देखना चाहा। किन्तु आज साल भर के भीतर भारत विश्व समुदाय के लिए एक जिम्मेदार राष्ट्र का पर्याय बन गया है। विश्व ने देख लिया है कि हम अपने राष्ट्र के हितों पर आंच नहीं आने देंगे। चाहे वो परमाणु अस्त्र क्षमता विकसित करने की बात हो, चाहे मिशाइल क्षमता विकसित करने की बात या अपनी मातृ भूमि से दुश्मनों को बाहर खदेड़ने की बात।

विश्व ने देख लिया है कि हम उन दबावों के आगे नहीं झुकेंगे, जो हमारे राष्ट्र हित में उठाये गये कदमों में रोड़ा अटकाएं। साथ ही विश्व ने यह भी देख लिया है कि जो भी हम कुछ करेंगे, वो आत्मरक्षा के लिए करेंगे, आक्रमण के लिए नहीं। विश्व ने यह भी समझ लिया है कि सब कुछ अत्यधिक संयम और जिम्मेदार के साथ करने में सक्षम हैं। ये ऐसे सिद्धांत हैं जिनका हमने पाकिस्तान द्वारा हम पर थोपे गये कारगिल युद्ध के दौरान पालन किया। हमारी जवाबी कार्यवाई सोच समझ कर थी। वो कुछ इस स्तर तक प्रभावीशाली थे कि दुश्मन हत्प्रभ रह गया। आज दुनिया इस बात को अच्छी तरह समझ गयी है कि आत्मरक्षा के लिए जो भी जरूरी होगा, भारत करेगा। दुनिया यह भी समझ गयी है कि चाहे कितना भी भड़काया जाये, भारत बड़ी जिम्मेदारी और संयम से कार्यवाई करेगा। इससे संसार में भारत की साख बढ़ी है।

पाकिस्तान के साथ संबंधों को सुधारने के लिए, लाहौर की बस यात्रा की गई। इससे दुनिया समझ गई कि हम सचमुच शांति और मित्रता के साथ रहना चाहते हैं। वह यात्रा कोई दिखावा नहीं थी। वह एक गंभीर, सोचा, समझा कदम था। जिसे यह जानते हुए भी उठाया गया था कि इसमें खतरे हो सकते हैं। हमारी ईमानदारी ने अंतरराष्ट्रीय जगत को प्रभावित किया। बाद में जब लाहौर की बस को कारगिल पहुंचा दिया गया। तो विश्व को यह समझने में देर नहीं लगी, कि पाकिस्तान ने न शिमला समझौते और लाहौर उद्घोषणा का उलंघन किया है। बल्कि विश्वास और उम्मीद की सीमाओं के साथ भी खिलवाड़ किया है। इसीलिए विश्व समुदाय का नजरिया बदला। पाकिस्तान विश्व मंच पर अकेला पड़ गया। भारत को पहली बार विश्व में इतना व्यापक समर्थन मिला है। मुझे विश्वास है कि पाकिस्तान की जनता भी इन घटनाओं पर विचार करेगी। हम मित्रता का संदेश लेकर वहां गये थे, बदले में हमें क्या मिला? सैकड़ों की जाने गयीं, संबंध बिगड़े। जो धन आर्थिक और सामाजिक विकास पर खर्च होना चाहिए था, उसका युद्ध पर व्यय हुआ। दोनों देशों की जनता के जीवन स्तर को ऊपर उठाने के लिए शांति चाहिए। शांति के लिए विश्वास जरूरी है। क्या कारगिल में जो कुछ हुआ है उससे विश्वास बढ़ा है? सशस्त्र घुसपैठ का रास्ता दोस्ती की तरफ ले जाता है? पाकिस्तान में आतंकवादियों को प्रशिक्षण दिया जा रहा है। उनके शिविर चलाए जा रहे हैं। आतंकवादियों के जत्थों को भारत में भेजा जा रहा है। वे निर्दोषों की हत्या कर रहे हैं। औरतों, बच्चों को निशाना बना रहे हैं। इस वातावरण में अर्थपूर्ण बातचीत कैसे हो सकती है ? पाकिस्तान को समझ लेना चाहिए कि आतंकवादी गतिविधियों को बढ़ावा देकर, वो किसी समस्या का समाधान नहीं कर सकता।

हम आतंकवादियों के मनसूबों को कभी सफल नहीं होने देंगे।...(तालियां) पंजाब आतंकवादियों से मुक्त है। जम्मू कश्मीर के लोग आतंकवाद से तंग आ चुके हैं। असम और पूर्वांचल भी त्रस्त हैं। हम शांति चाहते हैं। सभी शांति चाहते हैं। लोग अपने बच्चों का भविष्य बनाने के लिए चिंतित हैं। आतंकवाद पूरे विश्व के लिए एक अभिशाप है। जब उसके साथ मजहबी जूनून शामिल हो जाता है, तो वो मानवता के लिए एक बड़ा खतरा बन हाता है। करैला और नीम चढ़ा ये कहावत तो हम सब जानते हैं। हमारे यहां अभी तक आतंवादियों द्वारा, लगभग 35 हजार से अधिक लोग मारे जा चुके हैं। विश्व के और भागों में भी आतंकवादी एक बड़ी समस्या बन गये हैं। जो शांति और विकास की सारी संभावनाओं पर पानी फेर रहे हैं। विश्व जनमत को आतंकवाद के विरुद्ध संगठित करने की आवश्यकता है।

आज स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर भारत पूर्ण आत्मविश्वास से भरा खड़ा है। हम भविष्य की ओर देख रहे हैं। विश्व में हमारा सम्मान बढ़ा है। अब संकुचित और संकिर्ण विवाद लोगों का ध्यान आकर्षित नहीं करते। करगिल की पूरी लड़ाई के दौरान, मुझे दो बातों से विशेषकर संतोष हुआ। देश में कहीं भी साम्प्रदायिक तनाव का माहौल नहीं था। जम्मू कश्मीर समेत हर भाग में सद्भाव और भाईचारा बना रहा। इससे उन लोगों को जरूर ही हैरानी हुई होगी। जिन्होंने ये सोचा था कि लड़ाई छिड़ते ही भारत में दंगे भड़क उठेंगे। जिन्होंने उपद्रव की योजना बनाई थी, उन्हें भी जरूर निराशा हुई होगी। सभी वर्गों के लोगों ने युद्ध में सफलता के लिए काम किया। सभी क्षेत्रों देश प्रेम की एक प्रबल लहर दौड़ गयी।

जब मैं करगिल के सैनिकों को जाकर मिला, तो वहां मुझे पूरा भारत दिखाई पड़ा। नागालैण्ड से, असम से, तामिलनाडु से, लगभग सभी प्रदेशों से सैनिक देश के लिए लड़ रहे थे। जाति, धर्म या क्षेत्र के कारण उनके बीच कोई भी दूरी नहीं दिखाई पड़ी। यही वास्तविक भारत है, हमें इसी भारत के लिए जीना है, हमें इसी भारत के लिए जूझना है। और अगर जरूरत पड़ी तो इसी भारत के लिए जवानों की तरह मरना भी है।. . . (तालियां)

कारगिल ने एक बार फिर ये बता दिया है। कि जब हमारे देशप्रेम को ललकारा जाता है, तो हम सभी भारतीय पूर्ण विश्वास और दृढ़निश्चय के साथ एकता की मुटठी बांध खड़ हो जाते हैं। चुनौती का मिलकर सामना करते हैं। हमारे विरोधियों को इससे सावधान हो जाना चाहिए। लेकिन हमें भी ये सबक भूलना नहीं चाहिए, अब जबकि इस संकट पर काबू पा लिया गया है, तो हम एकता की इस बंधी मुट्ठी को ढीला न होने दें। समर अभी शेष है, नई चुनौतियां हमारा दरवाजा खटखटा रही हैं। कारगिल युद्ध के दौरान जिस भावना से देश ओतप्रोत था, वो

जीवन का एक स्थाई भाव बनना चाहिए। हम सभी को याद है कि गांधी जी ने हमें एक मंत्र दिया था, उन्होंने कहा था कि यदि कोई दुविधा हो कि तुम्हें क्या करना है, तो तुम भारत के उस सबसे असहाय व्यक्ति के बारे में सोचो और स्वयं से पूछो कि क्या तुम जो करने जा रहे हो उससे उस व्यक्ति की भलाई होगी? कारगिल ने हमें दूसरा मंत्र दिया है। कोई महत्वपूर्ण निर्णय लेने से पहले हम ये सोचें कि क्या ये हमारा कदम उस सैनिक के सम्मान के अनुरूप है, जिसने उस दुर्गम पहाड़ियों अपने प्राणों की आहुति दी थी।

जो चुनौतियां हमारे सामने हैं, उनका मुकाबला केवल सीमा पर तैनात जवानों को ही नहीं करना है, सैनिकों के पीछे संगठित और अनुशासित देश खड़ा रहे ये आवश्यक है। राष्ट्र हित को सर्वापरि मानकर ही हम देश की रक्षा और उसका विकास कर सकते हैं। यदि हमारी अर्थव्यवस्था सुदृढ़ नहीं है, और महत्वपूर्ण रक्षा के मामलों में अगर हम आत्मनिर्भर नहीं हैं, तो हम बाहरी चुनौति का सफलतापूर्वक सामना नहीं कर सकते। हम सब जहां भी तैनात हों, जिस काम भी लगे हों, उसे अच्छी तरह से निभाएं। देश व समाज के किसी भी अंग को निर्बल न होने दें। जिस प्रभावशाली तरीके से हमने विभिन्न संकटों और चुनौतियों का सामना किया है, उससे स्पष्ट है कि अगर हम ठान लें, तो भारत क्या नहीं कर सकता। जरूरत केवल इस बात की है कि जो करना है वो अब करके दिखायें।

मेरे दिमाग में ऐसे भारत की तस्वीर है, जहां न भूख होगी, न भय होगा, न निरक्षरता होगी, न निर्धनता होगी। ऐसे भारत की कल्पना करता हूं, जो सम्पन्न हो, सुदृढ़ हो, संवेदनशील हो, तथा जो विश्व के महान राष्ट्रों के बीच फिर से अपना आदर का स्थान प्राप्त करे।

आइए, हम ऐसे भारत का निर्माण करें, जिसमें संतुलित विकास हो, उसमें सभी क्षेत्रों के लोगों और समाज के सभी वर्गों को लाभ मिले। मुझे यह कहते हुए दुख होता है कि देश के अनेक क्षेत्र जिनमें पूर्वोत्तर के भी राज्य भी शामिल हैं, असंतुलित विकास से पीड़ित हैं। ये हमारी विशेष जिम्मेदारी है कि पूर्वोत्तर के लोगों को विकास की मुख्य धारा में लाया जाये।

आइए, हम ऐसे भारत का निर्माण करें, जिसमें दलित, अनिवासी के साथ पिछड़ा वर्ग अपने को आर्थिक रूप से वंचित महसूस न करें। वे सामाजिक न्याय का भी पूरा लाभ पायें। समता, ममता और सामाजिक समर्थता के रास्ते पर चल कर, हम इस आदर्श लक्ष्य को प्राप्त कर सकते हैं।

आइए, हम एक ऐसे भारत का निर्माण करें, जिसमें हमारी नारी शक्ति अपने परिवारों का भविष्य सवारने से लेकर, देश का भविष्य सवारने तक के सारे कार्यों में अपना पूरा योगदान दे। यह हमारी सामूहिक जिम्मेदारी है कि हम उन्हें आर्थिक, सामाजिक, शैक्षणिक तथा राजनीतिक अधिकार प्रदान करें। इस सम्बंध में मैं चाहूंगा कि संसद तथा राज्य विधान सभाओं में महिलाओं के लिए सीटों के आरक्षण संबंधी कानून को शीघ्र पास किया जाये। हम पहले यह देख चुके हैं कि पंचायत तथा स्थानीय निकायों में जहां कहीं भी महिलाओं को सेवा करने के अवसर मिले हैं, उन्होंने बहुत ही अच्छा काम दिखाया।...(तालियां)

आइए, हम ऐसे भारत का निर्माण करें, जिसमें अल्पसंख्यक समुदाय के लोगों को राष्ट्र के विकास का पूरा लाभ मिले। और उन्हें पूरा अवसर मिलें ताकि वो राष्ट्र की विकास में अपना पूर्ण योगदान दे सकें। देश सभी का है। कानून और सरकार की नजर में सब बराबर हैं। और उनके साथ समान व्यवहार होगा। भारत एक सेक्यूलर देश है, जिसे सर्वपंत समभाव का सिद्धांत घुट्टी में मिला है। यहां सभी समुदाय के लोगों को धार्मिक स्वतंत्रता है। यह भारत के लिए बहुत ही गर्व की बात है कि यहां विश्व के सभी धर्मों के लोग सद्भावना के साथ रहते हैं। विविधता में एकता हमारी अनमोल धरोहर है।

यह भी काफी संतोष का विषय है कि पिछले वर्ष साम्प्रदायिक हिंसा की घटनाएं अत्यअल्प हुईं। भारत संसार का सबसे बड़ा लोकतंत्र है। लोकतंत्र की परंपरा चिर प्राचीन काल से चली आ रही है। जब यह शताब्दी शुरू

हुई तो प्रजातंत्र केवल कुछ ही देशों में प्रचलित था। उनमें भी वो कुछ उच्च वर्गों के लोगों तक सीमित था। आज कुछ ही देश हैं जहां प्रजातंत्र नहीं है। दुनिया का ऐसा कोई भी देश नहीं है, जहां लोग प्रजातंत्र नहीं चाहते।

आइए, हम भारत के प्रजातंत्र को बलशाली बनाएं। दुनिया के अन्य देशों के लिए इसे आदर्श बनाएं। राजनीतिक प्रजातंत्र, और आर्थिक और सामाजिक प्रजातंत्र इनको साथ लेकर चलें।

आइए, हम भारत को ऐसा राष्ट्र बनाएं, जहां हर क्षेत्र में बड़ी सफलतायें हासिल हों। व्यापार तथा आर्थिक क्षेत्र में, शिक्षा के क्षेत्र में, विज्ञान और टेक्नोलोजी के क्षेत्र में, कला एवं संस्कृति के क्षेत्र में तथा खेल के क्षेत्र में भी हम बड़ी सफलताएं हासिल करें।

आइए, हम मिलकर भारत को सफलता का पर्याय बना दें। ऐसी उपलब्धि, जिसकी पूरी विश्व प्रशंसा करे। हमारा दिल खुशी से भर जाता है, जब हम अपने युवाओं और युवतीयों द्वारा हाल में प्राप्त की गयी उपलब्धियों पर नजर डालते हैं। विदेशों में काम कर रहे युवा भारतीयो की सफलता की कहानियां, प्रतिदिन सुर्खियों में आती है। यदि विदेशों में हमारे युवा भारतीय, ऐसी शानदार सफलताएं हासिल कर सकते हैं। तो हम भारत में ही उनकी ऐसी सफलता प्राप्त करने के लिए माहौल क्यों नहीं बना सकते ? ...(तालियां)

आइए, हम एक परिश्रमी भारत, परिश्रमी भारत, पराक्रमी भारत, विजयी भारत का निर्माण करें। हम इस सपने को साकार करने के लिए नकारात्मक सोच के दलदल में से निकलें। हम भूतजीवी न बनें, हम भविष्य की ओर देखें। विश्वास के साथ मंजिल ओर आगे बढ़ें। समस्याओं के हल ढूंढे। आज जब 20वी शताब्दी समाप्त होने जा रही है और 21वी शताब्दी द्वार पर दस्तक दे रही है। तब हमें उज्जवल अतीत से प्रेरणा लेकर, उज्जवलतर भविष्य के निर्माण के लिए संकल्प लेना है। हम एक सनातन, संस्कृति और गौरवपूर्ण सभ्यता के उत्तराधिकारी हैं। महानता हमारा अतीत भी है, और भविष्य भी।

आइए, हम मातृभूमि भारत के सभी प्राकृतिक और मानव संसाधनों का सदउपयोग करें। आने वाली सदी को, भारत की सदी बनाने का संकल्प करें।

आइए, अब हम सब मिलकर जय हिंद का घोष करें। आपको इसे दुहराना है।

जय हिंद, जय हिंद, जय हिंद,

धन्यवाद।